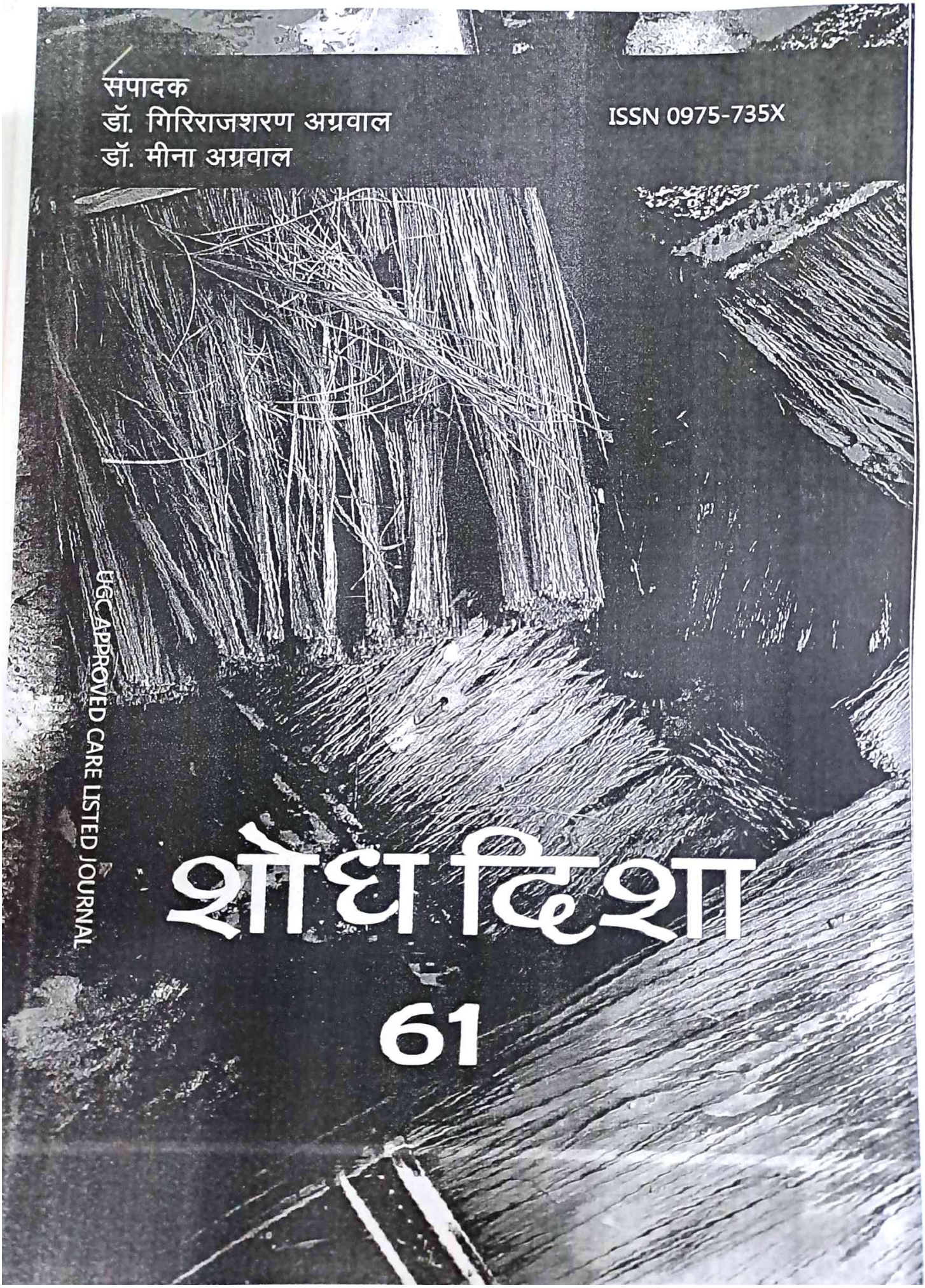
संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल
ISSN 0975-735X
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
शोध दिशा
61

अनुक्रम

'पहाड़ से ऊँचा' उपन्यास में मूल्यबोध/ **प्रो॰ डॉ॰ पी॰ व्ही॰ कोटमे** 19

गालिब छुटी शराब' के अनुभव से गुजरते हुए/ **डॉ॰ महेश दवंगे** 25

सत्ता और संस्कृति का अंतर्संबंध 'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा' उपन्यास के संदर्भ में/ **डॉ॰ आशीष** 29

शैलेश मटियानी के कथासाहित्य में आम आदमी/ **अंजू देवी, डॉ॰ पुष्पा दुबे** 37

स्त्री-विमर्श के आईने में जैनेंद्र के उपन्यासों की एक पड़ताल/ **डॉ॰ अजय कुमार** 42

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

अफीफा फातिमा शेक, डॉ॰ पूर्णिमा श्रीनिवासन 46

गोपालदास नीरज के फिल्मी गीतों का सामाजिक सरोकार/ **अनिल कुमार 'अनिवार्य'** 50

बघेली लोकगीतों में मानवीय संवेदनाएँ/ **आरती सोनी, डॉ॰ एच॰एस॰ द्विवेदी** 57

अखिलेश की कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग/ **अरविंद द्विवेदी** 61

ज्ञानरंजन की कहानियों में स्त्री-संवेदना/ **सरिता तिवारी** 67

हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध/ **डॉ॰ हंसराज चौहान** 72

राष्ट्रीय चेतना और बिरसा मुंडा/ **डॉ॰ बन्नाराम मीना** 78

हिंदी सिनेमा में वृद्ध जीवन/ **बेलमती पटेल, डॉ॰ अर्चना झा** 84

21वीं सदी के उपन्यासों में वैवाहिक स्थिति: समस्या और समाधान/ **ब्रजेश उपाध्याय** 89

हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में चित्रित नारी/ **डॉ॰ सुमन देवी** 94

पं॰ बालकृष्ण भट्ट की साहित्यिक पत्रकारिता/ **डॉ॰ बृजेंद्र कुमार अग्निहोत्री** 99

आजाद भारत में मिशनरी से पेशेवर बनी पत्रकारिता/ **डॉ॰ चंदन कुमार एवं नरेंद्र अनिकेत** 102

दलित साहित्य और सौंदर्यशास्त्र का सवाल/ **फातिमा बीवी॰ आर** 106

श्री गुरुग्रंथ साहिब में पर्यावरण चेतना/ **गगनदीप कौर, डॉ॰ राजिन्द्र पाल सिंह 'जोश'** 109

राष्ट्रीय स्वाधीनता समर का एक विस्मृत स्तंभ : जबलपुर नगर का झंडा सत्याग्रह/ **गोविन्द पांडेय, डॉ॰ आर॰के॰ बिजेता** 116

महाकवि भाई संतोख सिंह : जीवन और रचना/ **हरपाल सिंह** 121

फणीश्वरनाथ रेणु एवं नवकांत बरुवा के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध : एक तुलनात्मक अवलोकन/ **जैनेन्द्र चौहान** 127

ISSN 0975-735X

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

अफीफा फातिमा शेक, शोधार्थी, हिंदी
वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी
एडवांस स्टडीज (विस्टस), पल्लवरम, चेन्नई
डॉ॰ पूर्णिमा श्रीनिवासन
असिस्टेंट प्रोफेसर एंड हेड, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी
वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी
एडवांस स्टडीज (विस्टस), पल्लवरम, चेन्नई

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहते हुए अपने अभावों को पूरा करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। उसका यह प्रयत्न ही मानव सभ्यता के विकास की आधारशिला है। परस्पर सहयोग-सहवास में रहकर, पारस्परिक रीति-रिवाज, अधिकार और स्वतंत्रता को समग्र सामाजिक संबंध के लिए जीवनयापन करने वाला समूह ही 'समाज' है। समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों तथा समस्याओं का गहन जाल है।

समाज और साहित्य का संबंध–साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। मानव के बगैर समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती, वैसे ही साहित्य भी केवल मानव को केंद्र में रखकर लिखा जाता है। साहित्य का विकास समाज के विकास के साथ अवरित होता रहता है। समाज के पर्यावरण की उपज साहित्य होता है। समाज परिवर्तन के बाद साहित्य में भी परिवर्तन आता है। समाज की समस्याओं को दूर करने का प्रयास साहित्य करता है, इस तरह साहित्य और समाज का अंत:संबंध है।

कथा साहित्य वस्तुत: जीवन की सबसे नजदीकी विधा है। इसमें जीवन की सामाजिक समस्याओं को उभारकर इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि हर घटना जीवंत लगती है। साहित्य समाज की अभिव्यक्ति है। 21वीं सदी के प्रथम दशक में हिंदी कथा साहित्य में जिन चुनिंदा और श्रेष्ठ कथाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई उनमें मनीषा कुलश्रेष्ठ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। समकालीन कथा लेखन में सार्थक हस्तक्षेप करते हुए वे सतत सक्रिय कथा लेखिका है जिनके अब तक 51 कहानियाँ और 6 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में आधुनिक युग की सामाजिक समस्याओं, जैसे–पीढ़ी-अंतराल, जीवन में आने वाली विशृंखलताएँ, मध्यवर्ग के टूटते हुए व्यक्ति के मानसिक उद्वेलन, पुरुष की पैशाचिक कामुकता, वेश्यावृत्ति, आतंकवाद, रीति-रिवाज, बेमेल-विवाह, पाश्चात्य प्रभाव, बदलते परिप्रेक्ष्य और स्त्री संघर्ष को यथार्थ रूप में उभारने की कोशिश की गई है। उक्त विषयों को गरिमा सहित फलक पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। समाज की तह तक जाकर पात्रों के माध्यम से समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। समस्याओं का सामान्य परिचय निम्नलिखित है–

बिगड़ैल बच्चे–कहानी में पीढ़ी अंतराल एवं बच्चों के पालन-पोषण का वर्णन हुआ है।

 ISSN 0975-735X

है इसका सजीव चित्रण मनीषा जी ने दर्शाया है।

कुरजां–कहानी में जमीनदारी शोषण, अंधविश्वास, विधवा स्त्री का शोषण, बालविवाह आदि का मनीषा कुलश्रेष्ठ ने सराहनीय चित्रण किया है। अंधविश्वास किस प्रकार एक अच्छे भले इंसान को डायन मान उसके जीवन को बर्बाद कर देता है इसका चित्रण कहानी में हुआ है। कुरजां जिस गाँव में रहती है वहाँ के लोग उसे डायन मानकर गाँव से बाहर निकाल देते हैं। अशिक्षित कुरजां गाँव में आए नए हेडमास्टर के पास अपने बच्चे के दाखिले की बात करती है। मास्टर का नौकर कालू उन्हें कुरजां से दूर रहने के लिए कहता है। कालू कहता है कि 'मेरी ही औरत के जब तीसरी बच्चा होने को था तो हम देवता के यहाँ से लड़का होने की भभूत लाए, ये राँड सामने पड़ गई कि तीसरी भी लड़की पैदा हो गई।'[5] उसके हिसाब से कुरजां एक डायन है, उसकी नजर जिस पर पड़ती है वह बर्बाद हो जाते हैं। इस प्रकार एक गरीब बेसहारा विधवा औरत के प्रति गाँव वालों के अमानवीय व्यवहार का चित्रण किया गया है।

मास्टरनी–कहानी में कामकाजी स्त्री का संघर्ष, मंत्रियों के भ्रष्टाचार और दहेज की समस्या का वर्णन लेखिका ने पात्रों के माध्यम से किया है। नवविवाहित स्त्री बहुत आशाएँ और उम्मीदों के साथ पति के घर आती है। इसके विपरीत जब उसे पति का प्यार न मिलकर सिर्फ ताने मिलते हैं तो वह पूरी तरह से टूट जाती है। कहानी की नायिका सुषमा कहती है कि 'अब उसकी नौकरी को यही सास कोसती है यही पति उसे लापरवाह फूहड़ साबित करते हैं।'[6] भ्रष्ट समाज में अपने पति का प्यार पाने के लिए अपने अस्तित्व को त्याग देती है। फिर भी अपने असंतुष्ट पति को देखकर सिकुड़ जाती है। इसका संवेदनात्मक चित्रण लेखिका ने किया है।

स्वाँग–कहानी में जातिभेद, विलुप्त कला और कलाकारों की गरीबी आदि समस्याओं का वर्णन हुआ है। भारत में विलुप्त पुरानी कला और कलाकारों की गरीबी का वर्णन पात्र गफ्फार खाँ के माध्यम से हुआ है। भौतिकवाद के कारण अपनी संस्कृति से आज व्यक्ति किस प्रकार वंचित होता जा रहा है उसका यथार्थ रूप 'स्वाँग' कहानी के माध्यम से लेखिका ने बताया है।

कालिंदी–कहानी की नायिका एक वेश्या की बेटी कालिंदी है। नायिका के माध्यम से वेश्यावृत्ति, परिवार वालों के आर्थिक लोभ आदि समस्याओं का वर्णन लेखिका ने गंभीरतापूर्वक किया है। कालिंदी अपने पड़ोसी लड़के के साथ भाग जाती है। अपने पति से धोखा खाकर गर्भवती कालिंदी अपने मायके आ जाती है। इस कहानी में मनीषा जी ने वेश्यावृत्ति की विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

अनामा–इस कहानी में वाराणसी की गंदगी, गंगाजल प्रदूषण का वर्णन हुआ है। लेखिका ने कहानी के माध्यम से पर्यावरण चिंतन की समस्या को उजागर किया है। अनामा अपनी माँ का तर्पण कराने के लिए वाराणसी जाती है। वहाँ पर गरीब, भिखमंगे और गंदगी देखकर दंग रह जाती है। आज के समय में मनुष्य आधुनिकता के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता है। मानव अपनी सुख-सुविधाओं को पूरा करने के लिए पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ता है जिससे पर्यावरण प्रदूषण हो रहा है।

आर्किड–इस कहानी में मणिपुर की आतंकवादी समस्या का वर्णन लेखिका ने पात्रों के माध्यम से किया है। कहानी मणिपुर राज्य में सैनिक शासन के दौरान सेना और स्थानीय निवासियों के बीच होने वाले विभिन्न समस्याओं की कटु सच्चाई को प्रस्तुत करती है। जैसे तनाव, विरोध, झगड़े और तमाम तरह के जोखिम-भरे जीवन-संघर्ष आदि। अपने अधिकारों और आजादी के लिए

 ISSN 0975-735X

ने वाले मणिपुर के लोग आपदा के समय सेना और अस्पतालों पर निर्भर हैं। तटरक्षकों के नते-बिगड़ते संबंधों, मानवीय संवेदना की गहरी पड़ताल यह कहानी जीवंत रूप से करती है।

ठगनी–कहानी में कन्या भ्रूण हत्या की गंभीर समस्या पर लेखिका ने जोर दिया है। आज भी भारत में ऐसे गाँव हैं जहाँ पर कन्या भ्रूण हत्या हो रही हैं। 'ठगनी' कहानी स्त्री अस्मिता की जीवंत व मार्मिक कहानी है। कहानी में पुरुष सत्ता की क्रूर मानसिकता, स्त्री के अस्तित्व को कुचलने वाली सदियों से चली आ रही नवजात कन्या हत्या आदि कुरीतियों का पर्दाफाश किया है। मुख्यपात्र गूँगी कंचन के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या, जीवन की पीड़ा, त्रासदी और अस्तित्व शून्यता का सजीव चित्रण मनीषा जी ने किया है। इस कहानी में पिता किस प्रकार अपनी नवजात कन्या की हत्या करता है, उससे कंचन किस प्रकार बचकर गूँगी बनती है आदि का वर्णन है।

निष्कर्ष–मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियाँ समाज में फैली हर प्रकार की समस्या को उजागर करती हैं। आधुनिक काल के अनछुए पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। आदिवासी छात्राओं का शोषण, कन्या भ्रूण हत्या, विलुप्त कलाकारों की गरीबी, मणिपुर में राजनीतिक कारणों से उत्पन्न सामान्य जीवन का संघर्ष, अभिभावकों की अपनी संतान के प्रति अति सुरक्षित भावना, पर्यावरण चिंतन आदि अनछुए पहलुओं का विशेष चित्रण मनीषा जी की कहानियों में हुआ है।

संदर्भ

1. डॉ॰ व्यंकटकिशन राव पाटील, मैत्रैयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2011, पृ॰ 69
2. मनीषा कुलश्रेष्ठ, रंग-रूप, रस-गंध (कहानी-बिगड़ैल बच्चे), सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ॰ 121
3. वही, (कहानी-अवक्षेप), पृ॰ 109
4. वही, (कहानी-फाँस), पृ॰ 330
5. वही, (कहानी-भगोड़ा), पृ॰ 183
6. वही, (कहानी-कुरजाँ), पृ॰ 211
7. वही, (कहानी-मास्टरनी), पृ॰ 233

Afeefa Fathima Shaik
7/3 (2nd floor) Rebeiro street,
Gowdiamutt Road, Royapettah,
Chennai -600014
Mob. 9710623178
afeefasaboor@gmail.com

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 61/1 जनवरी-मार्च 2023 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
डॉ० प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
09557746346
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल